कलीसिया। अध्याय 10

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। उसकी उपस्थिति और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, उसकी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के मार्गदर्शन के लिए ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया के भवन के बारे में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर के सम्मुख समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* *2 कुरिन्थियों 1-3*

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (2 कुरिन्थियों 1-3) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके दूसरों के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।

जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट) *[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* *(4) यूहन्ना 3:16*

दो-दो करके ***समीक्षा*** करें।

(4) यूहन्ना 3:16 : क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* *यूहन्ना 3:1-36*

प्रस्तावित करें। **यूहन्ना 3:1-21** का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल की पाँच चरण की विधि का प्रयोग करें। यूहन्ना 3:1-21 बताता है कि यीशु मसीह नीकुदेमुस के सामने स्वयं को प्रगट करता हैं। यूहन्ना 3:22-36 बताता है कि किस प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला स्वयं को पीछे खींचने लगता है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 3:1-36 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(1) परमेश्वर अनन्तकाल के समय से प्रेम करता है।

एरोस्ट समय में ये परमेश्वर का *एकमात्र कार्य* है जो *अनन्तकाल तक जाता है और अनन्तकाल तक फैला हुआ है।* बाइबल में परमेश्वर का प्रेम एक महान, एकमात्र सच्चाई और सबसे बड़ी वास्तविकता है जो अनन्तकाल तक बनी रहती है (उससे भी पहले जब सृष्टि में "समय" की रचना हुई थी)। जिस प्रेम के द्वारा उसने हमें सृष्टि की रचना से पहले चुना, वह यीशु मसीह के देह धारण और मृत्यु में सबसे ज़्यादा सम्भव अभिव्यक्ति पाता है, और अब जब हम विश्वास करते हैं तो वह हमारे उद्धार में दिखता है।

(2) परमेश्वर ने जगत से महान प्रेम किया।

बाइबल और यूहन्ना रचित सुसमाचार में "जगत" शब्द के कई अलग अर्थ हैं (तुलना करें यूहन्ना 1:10)। यहाँ यूहन्ना 3:16 में, "जगत" शब्द "खोए हुए लोगों के जगत" को दर्शाता है, न कि जाति या राष्ट्रीयता के सम्बन्ध में किसी भेदभाव को। यह परमेश्वर के जीवन से विमुख उन लोगों को सन्दर्भित करता है, जो हर जाति, देश और पृथ्वी पर बोली जाने वाली भाषा से सम्बन्ध रखते हैं जो पापों से भरे हुए हैं, जिन्हें न्याय और उद्धार की ज़रूरत है। यह पृथ्वी पर पाये जाने वाले किसी विशेष व्यक्ति पर ज़ोर नहीं डालता परन्तु यह पूरे समुदाय को दर्शाता है। जगत को यहाँ बुराई के दायरे के रूप में नहीं देखा गया, जो खुलेआम परमेश्वर का, मसीह का और मसीही लोगों का विरोध करते हैं, जैसे की यूहन्ना 15:18 में। परमेश्वर बुराई से बैर रखता है और इसलिए वह उन लोगों से प्रेम नहीं रखता जो परमेश्वर, मसीह और मसीही लोगों से बैर रखते हैं (तुलना करें : भजन 5:4-6; रोमियों 1:18)। परमेश्वर जाति और राष्ट्रीयता में भेदभाव किये बिना "जगत" के खोये हुए लोगों से प्रेम करता है।

(3) परमेश्वर ने बहुमूल्य भेंट के रूप में अपना प्रेम दिया।

परमेश्वर ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया। यह शारीरिक, आत्मिक या प्रतीकात्मक पुत्र होने को नहीं दर्शाता है, बल्कि परमेश्वर की आत्मिक, शास्त्रीय, अनन्त और त्रिएकता में पुत्र होने को दर्शाता है (देखें नियमावली 2, पूरक 8, परमेश्वर का स्वभाव और परमेश्वर का पुत्र)। ये यह दर्शाता है कि मसीह अनन्तकाल का परमेश्वर है (यूहन्ना 1:14,18), सृष्टि की रचना से भी पहले (गुरुत्वाकर्षण के बल, इसके प्रकाश की ऊर्जा, सौरमण्डल जिसे मापा जा सकता है और समय केवल एक ही दिशा में चलता है)। तथ्य यह है कि परमेश्वर ने अपने *पुत्र को दे दिया* जिसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने पापों के लिए प्रायश्चित्त के बलिदान के रूप में अपना सबसे उत्तम बहुमूल्य बलिदान दिया था।

(4) केवल विश्वासियों को अनन्त जीवन प्राप्त होता है।

यीशु यहाँ उन सभी लोगों के विषय में बात कर रहा है जो उसे *दृढ़ता* और विश्वास के साथ ग्रहण करते हैं। यहाँ क्रिया "विश्वास करने के लिए" *वर्तमान समय* में है और ये यह दर्शाता है कि यह उन लोगों का उल्लेख नहीं करता है, जिन्होंने एक बार विश्वास का भाव बना लिया, लेकिन बाद में उन्होंने विश्वास करना बन्द कर दिया और वापस पीछे हट गए। ऐसे लोगों का विश्वास *केवल बौद्धिक* या *भावनात्मक विश्वास* होता है, *एक अस्थायी, ऐतिहासिक विश्वास, जिसके द्वारा बचा नहीं जा सकता।* वास्तविक विश्वास प्रत्येक दिन यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत सम्बन्ध में बन्धा रहता है और अन्त तक कायम रहता है।। हालाँकि सुसमाचार जगत में हर जाति, देश और भाषा के लोगों को प्रचार किया जाता है, परन्तु सुसमाचार सुननेवाला हर कोई व्यक्ति यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता है। लेकिन जो कोई भी यीशु मसीह पर विश्वास करता है, चाहे वह यहूदी हो या अन्यजाति, जिस समय वह विश्वास करता है उसी समय वह अनन्त जीवन को प्राप्त कर लेता है।

(5) अनन्त जीवन का स्वभाव

जिस पल आप यीशु मसीह को व्यक्तिगत रूप से जानने लगते और उसके साथ संगति रखने लगते हैं, वो ही "अनन्त जीवन" है (यूहन्ना 17:3)। यह एक नया जीवन है जिसमें निम्नलिखित बातें शामिल हैं : उद्धार का आश्वासन (यूहन्ना 10:28), परमेश्वर के लिए प्रेम, और शान्ति, अपने हृदय में प्रेम और जीवन में एक उद्देश्य और उसकी पूर्ति! यह एक ऐसा जीवन है जो इस युग के जीवन से एकदम भिन्न है और कभी खत्म नहीं होता है! यह आश्वासन है कि मसीह के दूसरे आगमन के बाद आप निश्चिततौर पर भविष्य में नए स्वर्ग और नई पृथ्वी पर महिमान्वित यीशु मसीह के साथ अद्भुत जीवन में हिस्सा लेंगे।

3:17-18

***खोज 2* : अविश्वास के लिए परमेश्वर का निर्णय।**

(1) यहूदियों का मानना था कि केवल वे ही विशेष रूप से परमेश्वर का चुना हुआ राष्ट्र थे।
उनका मानना था कि मसीह केवल अन्यजातियों को ही दण्ड देगा, क्योंकि इन जातियों ने इस्राएलियों पर अत्याचार किया था। उनका मानना था कि परमेश्वर इस्राएल का न्याय नहीं करेगा। हालाँकि, भविष्यद्वक्ता आमोस ने यहूदियों को चेतावनी दी थी कि अन्तिम न्याय के दिन में यहूदियों का भी न्याय होगा (आमोस 3:2)!

(2) यीशु सिखाता है कि परमेश्वर के उद्धार की योजना जगत के सभी देशों के लिए है।
उसने कहा कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिए नहीं भेजा, कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिए कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए (यूहन्ना 3:17)। यूहन्ना 3:16 के ही समान, "जगत" का यहाँ अर्थ हर जाति, देश और भाषा में खोए हुए लोगों के जगत से है। परमेश्वर की योजना न केवल लोगों को पाप के *दण्ड* से बचाने के लिए थी, बल्कि *पाप और उसकी शर्मिंदगी* से बचाने और उन्हें अनन्त जीवन देने के लिए भी थी।

(3) यीशु सिखाता है कि उद्धार या नाश के फल को इसी जीवन में निर्धारित किया जाता है।
यद्यपि यीशु मसीह के पहले आगमन का मुख्य उद्देश्य उद्धार करना था, इसका अर्थ यह नहीं है कि उसके दूसरे आगमन का उद्देश्य नाश करना होगा। यूहन्ना 3:18 में लिखा है : जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, *वह दोषी ठहर चुका,* इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया। किसी को भी अपने न्याय को प्राप्त करने के लिए अंतिम न्याय के दिन का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं है। आप बचेंगे या आपका नाश होगा (मरेंगे), इसका निर्णय *इसी जीवन में* तय किया जाना है! अंतिम न्याय के दिन वे सभी लोग जो यीशु मसीह पर विश्वास करते हैं, उनका नाश नहीं होगा (यूहन्ना 5:24)। क्योंकि उन्हें पहले ही क्षमा किया जा चुका है, उनके विरूद्ध मृत्यु की कोई सजा नहीं पढ़ी जाएगी!

हालाँकि, अंतिम न्याय के दिन सभी लोग जिन्होंने बुराई की है, वे दण्ड के पुनरुथान के लिए जी उठेंगे (यूहन्ना 5:28-29)। इसका मतलब यह नहीं है कि उनका केवल अन्तिम दिन में न्याय किया जायेगा और उन्हें दण्ड दिया जायेगा, बल्कि उनके दण्ड की सार्वजनिक रूप से घोषणा की जाएगी। जिन्होंने मसीह पर विश्वास न करके उसका इन्कार किया है, उन लोगों को अंतिम न्याय के दिन के आने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है, जैसे कि उनके लिए न्याय के दिन को स्थगित कर दिया गया हो। सभी अविश्वासियों को पहले से ही दण्ड का भागी ठहरा दिया गया है। यूहन्ना 3:36 कहता है, कि परमेश्वर की नाराज़गी और क्रोध सभी लोगों पर निर्भर करती है, जो एक वास्तविक और अटल विश्वास के द्वारा उसे स्वीकार करने से इन्कार करते हुए मसीह की आज्ञा नहीं मानते हैं। मृत्यु के बाद, आपको यीशु मसीह पर विश्वास करने का कोई दूसरा अवसर नहीं मिलेगा! उद्धार और दण्ड का निर्णय इसी जीवन में होगा!

कदम 3. प्रश्न.	**व्याख्या**
ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं? आईये यूहन्ना 3:1-36 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते। **लिखें:** अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें। साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।) **चर्चा करें।**(उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें) (नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)	

3:3 ,5 ,7

प्रश्न 1 **- "नए सिरे से जन्म लेने" का क्या अर्थ है?**

नोट्स।

नीकुदेमुस वास्तव में यह जानना चाहता था कि : "मैं ऐसा कौन-सा भला काम करूँ, जिससे कि परमेश्वर के राज्य में प्रवेश कर सकूँ?" उसके कहने का तात्पर्य यह था कि "मैं अनन्त जीवन कैसे प्राप्त करूँ?" यीशु ने एक दृष्टान्त के रूप में इसका उत्तर दिया। उस दृष्टान्त में उसका उत्तर छिपा हुआ था। यीशु ने कहा, "कि जब तक कोई नए सिरे से न

जन्मे, तब तक वह परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकता।"

(1) नए सिरे से जन्म लेने का अर्थ है "नया" और "ऊपर से" जन्म लेना, अर्थात पवित्र आत्मा द्वारा जन्म लेना।

नए सिरे से जन्म लेने का शब्द का शाब्दिक अर्थ है कि *ऊपर से,* परमेश्वर की ओर से जन्म लेना जो कि स्वर्ग में रहता है (यूहन्ना 3:31)। इसका अर्थ यह भी है कि आप *नए सिरे से जन्म* लेते हैं, अर्थात् *शारीरिक रूप से जन्म लेने के बाद आत्मिक रूप से पैदा होना* (तुलना करें : गलातियों 4:9, फिर से)। यूहन्ना 3:6 में यीशु कहता है कि "क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।" शरीर से जन्म लेने का अर्थ एक पापी मनुष्य स्वभाव के साथ शारीरिक रूप से पैदा होना। आत्मा से जन्म लेने का अर्थ एक नए आत्मिक स्वभाव के साथ आत्मिक रूप से जन्म लेना है।

(2) जल से बपतिस्मा लेना पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा लेने का केवल एक संकेत और मुहर है।

यूहन्ना 3:5 में, यीशु ने कहा, "जब तक कोई मनुष्य *जल और आत्मा* से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।" मत्ती 3:11 में भी हम *जल और आत्मा* के बारे में पढ़ते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहता है कि "मैं तुम्हे जल से बपतिस्मा देता हूँ... परन्तु यीशु मसीह तुम्हे पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।" इसका अर्थ यह है लोगों के हृदयों और जीवनों में पवित्र आत्मा के कामों के द्वारा ही उनका नए सिरे से जन्म होता है। जब पवित्र आत्मा लोगों को फिर से जीवित करने के लिए परमेश्वर के सुसमाचार या शिक्षा का प्रयोग करता है, तब लोगों का नए सिरे से जन्म होता है (1 पतरस 1:23)। लोग केवल जल से बपतिस्मा लेकर ही नए सिरे से जन्म नहीं ले सकते। जल से बपतिस्मा लेना एक प्रत्यक्ष संकेत (या चित्रमय प्रस्तुति) और वास्तविक मुहर (पुष्टिकरण) है अर्थात् आत्मा के साथ अप्रत्यक्ष रूप से बपतिस्मा लेना। जब किसी वस्तु के साथ संकेत जुड़े हुए होते हैं, तब संकेत का मूल्य होता है। जब जल से बपतिस्मा लेने का अर्थ है कि आपका पवित्र आत्मा से बपतिस्मा लेने के द्वारा नया जन्म हो चुका है तो क्या जल से बपतिस्मा लेने का कोई महत्व बाकी रह जाता है। चूँकि हम यूहन्ना 3:6-8 में "जल से जन्म" लेने के बारे में नहीं, केवल "आत्मा से जन्म" लेने के बारे में पढ़ते हैं, वह यह साबित करता है कि "आत्मा से बपतिस्मा" लेना एक महत्वपूर्ण बात है!

(3) पवित्र आत्मा द्वारा फिर से जन्म लेना अति आवश्यक और परमेश्वर का एक उत्तम कार्य है।

यूहन्ना 3:7-8 में यीशु कहता है, "अचम्भा न कर, कि मैंने तुझ से कहा, कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है। हवा जिधर चाहती है उधर चलती है, और तू उसका शब्द सुनता है, परन्तु नहीं जानता, कि वह कहाँ से आती और किधर को जाती है? जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।" सभी यहूदियों के समान, नीकुदेमुस का भी यह मानना था कि व्यवस्था के द्वारा लोगों को बचाया जा सकता है। अब यीशु ने उन्हें यह बताकर आश्चर्यचकित कर दिया कि उद्धार को परमेश्वर के अनुग्रह की भेंट के रूप में दिया गया है, न कि मनुष्य द्वारा अर्जित कार्यों के द्वारा। यीशु ने बताया कि व्यवस्था के द्वारा नहीं बल्कि पवित्र आत्मा के द्वारा ही मनुष्य नए सिरे से जन्म ले सकता है।

आदि में उद्धार परमेश्वर का एक सार्वभौमिक काम है और मनुष्य पूरी तरह निष्क्रिय है। पृथ्वी पर कोई ऐसा नहीं जो हवा की दिशा को बदल सके या उसे आदेश दे सके। यह किसी मनुष्य पर निर्भर हुए बिना स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करती है। इसी प्रकार, पृथ्वी पर कोई भी अपने उद्धार को (पुनर्जन्म) नियंत्रित या निर्देशित नहीं कर सकता। पवित्र आत्मा मनुष्य पर निर्भर हुए बिना स्वतंत्रतापूर्वक कार्य करता है। नये सिरे से जन्म लेना परमेश्वर का एक सार्वभौमिक काम है जिसे मनुष्य नियंत्रित नहीं कर सकता। पुराने नियम के अनुसार नीकुदेमुस को यह पता होना चाहिए था कि वह एक अधर्मी मनुष्य है (तुलना करें : उत्पत्ति 6:5; अय्यूब 14:4; भजन 51:5; यिर्मयाह 17:9) और स्वयं को बचाने में असमर्थ है (तुलना करें : यशायाह 43:10-11)। उसे यीशु द्वारा दी गई शिक्षा पर इतना अचम्भित नहीं होना चाहिए था।

3:3,5

प्रश्न 2 - "परमेश्वर का राज्य" क्या है?

नोट्स

(1) परमेश्वर का राज्य

परमेश्वर का राज्य (हृदय और जीवन) एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें परमेश्वर का अनुग्रह पाया जाता है और जहाँ मसीह के द्वारा परमेश्वर के राज्य को मान्यता, अंगीकार और उसका पालन किया जाता है (लूका 17:20-21)। परमेश्वर के राज्य (शासन) को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया गया है :

- विश्वासियों का उद्धार (मरकुस 10:24-27) आदि से (उनकी आत्माओं का उद्धार) अन्त तक (उनका शारीरिक उद्धार)।
- संवैधानिक रूप से और पृथ्वी पर एक कलीसिया के रूप में विश्वासियों की वृद्धि (मत्ती 16:18-19)।
- मानव समाज के प्रत्येक पहलू में विश्वासियों के भले कार्य (प्रभाव) (मत्ती 25:34-40; रोमियों 14:17) (बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, सामाजिक और आतिमक)।
- नया स्वर्ग और नई पृथ्वी (इब्रानियों 12:22-24; 2 पतरस 3:10-13)।

(2) पुनर्जन्म और विश्वास के माध्यम से प्रवेश करना।

"परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना" "अनन्त जीवन प्राप्त करने" या "बचाये जाने" के समान है। इस प्रकार, यूहन्ना 3:3-8 और यूहन्ना 3:16-17 के बीच की तुलना सिखाती है कि "परमेश्वर का उत्तम कार्य" (आत्मा के द्वारा पुनर्जन्म) "मनुष्य के कार्य से" (यीशु मसीह पर विश्वास करना) पहले होता है (यूहन्ना 6:44,37; यूहन्ना 17:6)।

परन्तु मनुष्य यह नहीं समझ पाता है, कि उसकी अपनी सोच के अनुसार, *परमेश्वर के द्वारा नये सिरे से जन्म लेना* और *मनुष्य का विश्वास करना* दोनों एक ही बात है। उसकी अपनी सोच के अनुसार *परमेश्वर के द्वारा जन्म लेना* और *मसीह को ग्रहण करना* या *मसीह पर विश्वास करना* एक ही समान है। यूहन्ना 1:12-13, "परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया - वह सन्तान जो प्राकृतिक वंश द्वारा उत्पन्न न हुई हो (*शारीरिक वंश*, उदाहरण - अब्राहम से) अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं। वे न तो लहू से, न शरीर की इच्छा से (शारीरिक इच्छा, नर और नारी द्वारा बनाये गए सम्बन्ध), न मनुष्य की इच्छा से (*इच्छा शक्ति* या मनुष्य के निर्णय) (रोमियों 8:7-8), परन्तु परमेश्वर से उत्पन्न हुए हैं (अलौकिक, ईश्वरीय, ऊपर से)।"

3:9-13

प्रश्न 3 **- स्वर्गीय बातों के विषय में जानने और उसकी गवाही देने के विषय से यीशु का क्या अर्थ है?**

नोट्स

यूहना 3:11 में, यीशु ने कहा, कि वह स्वयं और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला "स्वर्गीय बातों" को जानते हैं और उसके विषय में गवाही भी दी। परन्तु यहूदी धर्म को माननेवाले अगुवों ने उनकी इस गवाही को ग्रहण नहीं किया। यीशु यह कह सकता था, क्योंकि वह आप ही जानता था कि उनके मन में क्या है और यीशु उन्हें जो शिक्षा दे रहा था वह उस शिक्षा के प्रति उनकी हिचकिचाहट को देख सकता था (तुलना करें : यूहन्ना 2:25)।

(1) पृथ्वी की बातें।

यूहन्ना 3:12 में यीशु कहता है, "जब मैंने तुम से *पृथ्वी की बातें* कहीं, और तुम प्रतीति नहीं करते।" वह उन बातों के विषय में बात कर रहा था जो स्वभाव और मूल में स्वर्गीय हैं, लेकिन पृथ्वी पर होती हैं है जैसे आत्मा के साथ बपतिस्मा और जल के साथ बपतिस्मा। हालाँकि यहेजकेल 36:25-27 में, पवित्र आत्मा द्वारा लोगों के नये सिरे से जन्म लेने के विषय में स्पष्टरूप से पुराने नियम में और नये नियम में यीशु द्वारा सिखाया गया है, फिर भी अधिकांश यहूदियों ने इसे अस्वीकार कर दिया। परमेश्वर ने कहा, "मैं तुम को तुम्हारी सारी अशुद्धता और मूरतों से शुद्ध करूँगा। मैं तुम को नया मन दूँगा, और तुम्हारे भीतर नई आत्मा उत्पन्न करूँगा, और तुम्हारी देह में से पत्थर का हृदय निकालकर तुम को मांस का हृदय दूँगा। और मैं अपना आत्मा तुम्हारे भीतर देकर ऐसा करूँगा कि तुम मेरी विधियों पर चलोगे और मेरे नियमों को मानकर उनके अनुसार करोगे।" नये सिरे से जन्म लेना पृथ्वी पर मानव अनुभव के क्षेत्र के भीतर होता है। इसलिए जो कोई व्यक्ति पुराने नियम को पढ़ता है और परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपनी स्वभाविक असमर्थता को दर्शाता है, वह व्यक्ति नये सिरे से जन्म लेने की आवश्यकता को समझ चुका है!

अन्य "पृथ्वी की बातें" हैं : मसीह का अपने लोगों के लिए पहला आगमन (यशायाह 40:3; मलाकी 3:1-2), परमेश्वर के दास की मृत्यु और उसका फिर से जी उठना और समस्त जगत में पाई जाने वाली अन्यजातियों के लोगों को सुसमाचार सुनाना (यशायाह 49:6)। नीकुदेमुस और उसके जैसे लोग सोचते थे कि "पृथ्वी की बातें" अविश्वसनीय थीं, तो जब यीशु ने "स्वर्गीय बातों" के विषय में बात की तो वे इन बातों की प्रतीति कैसे करते?

(2) स्वर्गीय बातें।

यूहन्ना 3:13 में यीशु ने कहा, "और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।" "स्वर्गीय बातें" स्वयं परमेश्वर (यूहन्ना 1:18) और परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना हैं जिसकी व्याख्या यूहन्ना 3:13-18 में की गयी है। केवल परमेश्वर का पुत्र ही परमेश्वर की उपस्थिति में रहा और स्वर्ग में किए गए सभी निर्णयों को जानता है। इसलिए यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने के द्वारा जगत के हर देश से लोगों को बचाने की परमेश्वर की योजना तब तक मानव ज्ञान की सीमा के बाहर है जब तक कि वह मनुष्य को प्रगट नहीं की जाती। केवल यीशु मसीह स्वर्ग से पृथ्वी पर उतर आया और केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग में चढ़ गया (इफिसियों 4: 9-10)[1]। केवल यीशु मसीह ही परमेश्वर के उद्धार की अनन्त योजना को जानता है। केवल यीशु मसीह ने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धार की योजना को उजागर किया और केवल यीशु मसीह उस योजना को पृथ्वी पर ले जाता है (मत्ती 11:25-27)। केवल यीशु मसीह ही स्वर्ग में पुस्तक को खोलता है और इसकी बातों को प्रगट करता है (प्रकाशितवाक्य 5:1-5)!

3:14-15

***प्रश्न 4* - जब यीशु कहता है, "उसका ऊँचे पर चढ़ाया जाना अवश्य है" तो इसका क्या अर्थ है?**

नोट्स

(1) पुराने नियम में दिये गए उदाहरण और उनका नए नियम में पूरा होना।

परमेश्वर के उद्धार की योजना को :

- पुराने नियम के उदाहरणों (प्रकार) में आंशिक रूप से उजागर किया गया था
- लेकिन केवल नए नियम में यीशु मसीह के द्वारा इसको पूरी तरह से उजागर किया गया।

पुराने नियम में गिनती की पुस्तक के अध्याय 21 में परमेश्वर के उद्धार की योजना का चित्रण (या प्रकार) जंगल में एक खम्बे पर पीतल के एक सर्प के द्वारा किया गया था। उद्धार की परमेश्वर की योजना की पूर्ति परमेश्वर के पुत्र को क्रूस पर चढ़ाने से हुई!

पुराने नियम में पाए जाने वाले उदाहरण और नये नियम में इसकी पूर्ति के बीच समानता पाई जाती है। दोनों उदाहरणों में, मृत्यु पाप की सजा के रूप में दर्शायी गयी है। दोनों ही उदाहरणों में, परमेश्वर स्वयं अनुग्रह का एक उपाय प्रदान करता है। दोनों उदाहरणों में किसी न किसी को सार्वजनिक दृष्टिकोण से उठाया जाना चाहिए था। दोनों ही उदाहरणों में, केवल वे लोग जो अपने हृदय में विश्वास रखते हुए सर्प को या यीशु मसीह की ओर देखते हैं, वही लोग मृत्यु से बचाए जाते हैं।

(2) मेशा की तरह, पूर्ति (वास्तविकता) दृष्टान्तों (चित्रण) से परे है।

पुराने नियम में, केवल इस्राएलियों को मृत्यु का भय था, लेकिन नये नियम में जगत के सभी लोगों को अपने पापों के कारण आत्मिक, शारीरिक और अनन्त मृत्यु का भय है। पुराने नियम में, पीतल का सर्प ही एक ऐसा प्रतीक था जो लोगों का ठीक नहीं कर सकता था। लेकिन नये नियम में यीशु मसीह एक सच्चाई है, अर्थात परमेश्वर जिसके पास विश्वासियों को बचाने और अविश्वासियों को नाश करने की सामर्थ्य है।

(3) क्रूस पर यीशु मसीह के चढ़ाये जाने को एक "आवश्यक" कार्य के रूप में दर्शाया गया है।

यीशु मसीह कहता है कि उसका "ऊपर" चढ़ाया जाना आवश्यक है। क्रूस पर चढ़ाया जाना जगत के कई उपायों में से एक नहीं है - क्रूस ही एकमात्र सम्भव उपाय है जिसके द्वारा पाप और अनन्त मृत्यु से बचा जा सकता है (तुलना करें : 1 कुरिन्थियों 1:22-24)! लोगों के उद्धार के लिए परमेश्वर की अपेक्षा एक तरफ 100% धर्मी और पवित्र जीवन है और दूसरी ओर पाप का दण्ड 100% है! यीशु मसीह के अलावा कोई मनुष्य ऐसा नहीं कर सकता था! केवल यीशु मसीह के परिपूर्ण जीवन और उसकी मृत्यु के द्वारा उन लोगों के पापों के लिए जो उस पर विश्वास करते हैं, परमेश्वर के उद्धार पाने की अपेक्षा की पूर्ती हो सकती है। केवल क्रूस पर ही परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता का उसके प्रेम और दया के साथ मेल-मिलाप हुआ! केवल क्रूस के द्वारा ही लोगों के पापों के खिलाफ परमेश्वर का धर्ममय क्रोध, खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर के अवर्णनीय प्रेम के साथ आया!

---

[1] "जाहिर तौर पर मृत्यु" का अनुभव जिसमें लोग स्वर्ग या नरक में होने का दावा करते हैं और फिर वे स्वर्ग या नरक का वर्णन करते हैं, सब झूठ है! यीशु मसीह स्वप्न और दर्शन के द्वारा प्रगट होता है। परन्तु केवल यीशु मसीह ही जानता है कि स्वर्ग कैसा दिखता है (मत्ती 11:27)!

उसको "ऊपर चढ़ाने" का अर्थ उसके क्रूस पर चढ़ाये जाने से था लेकिन मृतकों में से उसके पुनरुत्थान, उसके स्वर्गारोहण और उसके सिंहासन पर बैठाये जाने को इससे अलग नहीं किया जा सकता है (प्रेरितों के काम 2:33)। यद्यपि सभी लोगों की दृष्टि में मसीह को ऊपर चढ़ाया गया, लेकिन फिर भी सभी लोग नहीं बचाए गए हैं, क्योंकि सभी लोग विश्वास नहीं करते हैं।

3:19-21

प्रश्न 5 - **क्यों कुछ लोगों को अपराधी (दोषी) ठहराया गया है?**

नोट्स

कुछ लोगों को दोषी इसीलिए ठहराया गया है क्योंकि वे अपने हृदय को कठोर कर चुके हैं और यीशु मसीह में परमेश्वर के दर्शन को ग्रहण करने से इनकार करते हैं। यीशु मसीह ने परमेश्वर को प्रगट किया : उसने मनुष्य के सामने परमेश्वर के गुणों को प्रगट किया (यूहन्ना 1:3-4)। यीशु मसीह ने अपने सम्पूर्ण पवित्र और धार्मिक जीवन से उद्धार को प्राप्त किया और मनुष्य के अपवित्र और अधर्मी जीवन के लिए मोल चुकाया। यीशु मसीह ने परमेश्वर के सिंहासन की घोषणा की और लोगों को पश्चाताप् करने और विश्वास करने के लिए प्रोत्साहित किया (मरकुस 1:14-15)। मनुष्य को बचाने के लिए जो कुछ आवश्यक था वो सब कुछ यीशु मसीह ने किया।

जो लोग यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं, जो अंधकार में अपना जीवन व्यतीत करते हैं उन्हें पहले से ही दोषी ठहरा दिया गया है (यूहन्ना 3:18; 1 यूहन्ना 3:6-9)। लेकिन ज्योति (यीशु मसीह और उसकी सच्चाई) सभी अन्धकार की बातों को दूर करती है। जो कोई भी ज्योति में आने से इनकार करेगा, वह अन्धकार में ही रहेगा। जो कोई भी मसीही सभाओं से दूर रहता है, बाइबल पढ़ने से या अपने भाई के साथ मिलाप करने से इन्कार करता है, वह ज्योति से बैर रखता है। वह अपने आप को अन्धेरे में छिपाता है, क्योंकि वह नहीं चाहता कि ज्योति उसके अन्धकार को उजागर करे। लेकिन ज्योति में आने वाले सभी लोग यह साबित करते हैं कि मसीह के द्वारा परमेश्वर उन में कार्य कर रहा है (1 यूहन्ना 1: 5-7)! वे अपने जीवन की नई जिंदगी के द्वारा अपने विश्वास की वास्तविकता को साबित करेंगे।

इस प्रकार, इस जगत के सभी लोग यीशु मसीह (यूहन्ना 3:18,36; लूका 2:3) के साथ अपने सम्बन्ध के आधार पर खड़े होते हैं या गिरते हैं।

3:22-26

प्रश्न 6 - **जल से बपतिस्मा (यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और मसीह के चेलों का बपतिस्मा) और यहूदियों की शुद्धिकरण की व्यवस्था (बपतिस्मा देने की विधि) के बीच क्या सम्बन्ध था?**

नोट्स

मसीह की सेवकाई के पहले वर्ष के दौरान यीशु मसीह और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की लोगों को जल से बपतिस्मा देने की और प्रचार करने की सेवकाई में समानता थी (यूहन्ना 4:1-2)। यूहन्ना शालेम के निकट एनोन में (जो शोमरोन से यरदन के पार दिकापुलिस प्रान्त में है) बपतिस्मा देता था (यूहन्ना 3:23)। यीशु और उसके चेलों ने शायद यहूदिया प्रान्त में यरीहो के करीब यरदन नदी के उथले स्थानों में बपतिस्मा लिया। यीशु ने स्वयं जल से लोगों को बपतिस्मा नहीं दिया, परन्तु उसके चेलों ने ऐसा किया (यूहन्ना 4: 2)। यह दर्शाता है कि यीशु मसीह यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से कहीं अधिक महान था, क्योंकि उसने आत्मा से लोगों को बपतिस्मा दिया और अपने चेलों (तुलना करें : मत्ती 28:19) को जल के द्वारा बपतिस्मा देने दिया। यह मई से दिसम्बर 27वीं ई. के करीब हुआ जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को बन्दी बनाया गया था (मत्ती 4:12)। यहूदी इस बात से प्रसन्न थे कि यूहन्ना को बन्दी बना लिया गया है, क्योंकि वह हमेशा ये प्रचार करता था कि उन्हें पश्चाताप् करने की ज़रूरत है। लेकिन जब उन्होंने यह सुना कि यीशु और उसके चेले यूहन्ना की तुलना में और भी अधिक चेले बना रहे हैं तब उनका ये आनन्द ज़्यादा समय तक बना नहीं रहा। यह अभिव्यक्ति कि "हर कोई उसके पास आता है" (यूहन्ना 3:26) एक अलंकार है : एक अतिरंजित (एक अतिशयोक्ति) है।

यरूशलेम के यहूदी याजकों और लेवियों ने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मे को शुद्धिकरण की विधि के रूप में

माना (यूहन्ना 1:25; इब्रानियों 6:2)। इसके अलावा यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और उसके चेलों ने बपतिस्मा को शुद्धिकरण की एक विधि के रूप में माना : "पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप का एक बपतिस्मा" (मरकुस 1:4)। इस प्रकार यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले और यहूदियों के अनुयायियों के बीच यहूदियों की शुद्धिकरण की विधि को लेकर एक विवाद उत्पन्न हुआ (यूहन्ना 3:25)। इस विधि को "धर्मान्तरित का बपतिस्मा" कहा गया। जब एक गैर-यहूदी, यहूदी धर्म में शामिल होने के लिए इच्छुक होता था, तो वह स्नान (अपने ऊपर जल डालने के द्वारा) ले लिया करता था, और शारीरिक तौर पर उसका खतना होता था और वह पुराने नियम की व्यवस्था का पालन करने का वायदा करता था (तुलना करें : इब्रानियों 6:2)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के चेलों का तर्क शायद यह था कि उन्होंने अपने शिक्षक, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बपतिस्मे को, यहूदियों के धर्मनिरपेक्ष बपतिस्मे और यीशु के चेलों के बपतिस्मे की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बताया था। यही कारण है कि वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्यों ज्यादातर लोग यीशु के पास जल से बपतिस्मा लेने के लिए गए। इस प्रकार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का और यीशु का जल द्वारा बपतिस्मा (यूनानी : बेपटिजो) (यूहन्ना 3:23,26) यहाँ यहूदी शुद्धिकरण की विधि (ग्रीक: कथारिस्मोस) (यूहन्ना 3:25) से जुड़ा हुआ है।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जल से बपतिस्मे ने मसीहा, यीशु मसीह को इस्राएल (यूहन्ना 1:31) के सामने प्रगट किया और इस प्रकार उन्हें यीशु मसीह और उसके द्वारा उद्धार का कार्य प्राप्त करने के लिए तैयार किया।

लेकिन जल से मसीही बपतिस्मा मसीह के आगमन से पहले और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा उद्धार के उसके पूरे कार्य से जुड़ा हुआ है। जल के साथ मसीही बपतिस्मा लेना एक संकेत और मुहर है कि उस विश्वासी का :

- यीशु मसीह और उसके उद्धार (अतीत में, पाप से पश्चाताप और वर्तमान में पाप की चीजों से और भविष्य में पाप की सजा और पाप की उपस्थिति) में एक हिस्सा है।
- आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा नए सिरे से जन्म हुआ है (प्रेरितों 10:44-48; तीतुस 3:4-7)।
- उसके सारे पाप धुल चुके हैं (प्रेरितों के काम 22:16), अर्थात् उसे पूर्ण रीति से क्षमा किया जा चुका है और परमेश्वर की दृष्टि में वह अब निर्दोष है।
- परमेश्वर की वाचा वाले लोगों का या कलीसिया का सदस्य बन चुका है (गलातियों 3:27-29; 1 कुरिन्थियों 12:13)।

3:34

प्रश्न 7 **- इसका क्या अर्थ है कि परमेश्वर ने आत्मा को बिना नापे यीशु को दिया है?**

नोट्स

इसका अर्थ यह है कि जैसा पौलुस कुलुस्सियों 2:9 में कहता है, "क्योंकि उस में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।"

यूहन्ना रचित सुसमाचार अक्सर कहता है कि परमेश्वर ने यीशु मसीह को भेजा (यूहन्ना 3:17,34; 5:36,38; 6:29, 57:7:29; 8:42; 9:7; 10:36; 11:42; 17:3,8,18,21,23,25; 20:21) और यह कि यीशु मसीह की गवाही परमेश्वर के वचन ही हैं (इब्रानियों 1;1-2)। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला एक साधारण भविष्यद्वक्ता था (तुलना करें मत्ती 11:13) जिसने एक सीमित रूप में पवित्र आत्मा और आत्मा के वरदानों को प्राप्त किया था। लेकिन यीशु मसीह दूसरे भविष्यद्वक्ताओं (प्रेरितों के काम 3:22-26) की तरह एक साधारण भविष्यद्वक्ता नहीं है, क्योंकि यीशु मसीह को पवित्र आत्मा "बिना नापे" प्राप्त हुआ था, जो कि उसकी पूर्णता में है (यूहन्ना 1:32; तुलना करें : कुलुस्सियों 2:9)। इसका अर्थ यह है कि यीशु मसीह अदृश्य त्रिएकता है जो परमेश्वर की छवि को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाता है। यीशु मसीह पवित्र आत्मा है (2 कुरिन्थियों 3:17-18) और पवित्र आत्मा यीशु मसीह की आत्मा है (रोमियों 8:8-10; 1 पतरस 1:9-12)।

3:35-36

प्रश्न 8 **- सभी लोग यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्धों में क्यों दृढ़ता से खड़े रहते या गिर जाते हैं?**

नोट्स

यीशु मसीह पृथ्वी की सब वस्तुओं को अपने हाथों में रखता है। परमेश्वर पिता पुत्र से प्रेम रखता है और उसने सब वस्तुएँ उसके हाथ में दे दी हैं (यूहन्ना 3:35; तुलना करे यूहन्ना 13:3)। परमेश्वर ने स्वयं को यीशु मसीह के द्वारा प्रगट किया (यूहन्ना 14:6; मत्ती 11:27; कुलुस्सियों 1:15,19; कुलुस्सियों 2:9)। परमेश्वर ने अपने आखिरी और अन्तिम शब्द को यीशु मसीह के द्वारा बोला (यूहन्ना 12:49; इब्रानियों 1:1; प्रकाशितवाक्य 19:10; प्रकाशितवाक्य 22:18-19)। कोई भी व्यक्ति जो यीशु मसीह के बाद आया हो और स्वयं को "एक भविष्यद्वक्ता" कहता हो, वह बाइबल के परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है!

- परमेश्वर ने यीशु मसीह को पृथ्वी की सब वस्तुओं के ऊपर अधिकार दिया है (मत्ती 28:18; इफिसियों 1:20-23)।
- परमेश्वर केवल यीशु मसीह के द्वारा लोगों को बचाता है (यूहन्ना 3:16,18,36; 6:37; 14:6; 17:2; प्रेरितों के काम 4:12; 1 यूहन्ना 5:11-12)।
- परमेश्वर मृतकों को यीशु मसीह के द्वारा जिलायेगा (यूहन्ना 5:28-29)।
- और परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा जगत में रहने वाले लोगों का न्याय करेगा (यूहन्ना 5:22)।

इसलिए सभी लोग यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्धों में दृढ़ता से खड़े रहते या गिर जाते हैं (यूहन्ना 3:36)। यूहन्ना की अन्तिम गवाही यह थी कि "जो पुत्र पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; परन्तु जो पुत्र की नहीं मानता, वह अनन्त जीवन को नहीं देखेगा, परन्तु परमेश्वर का क्रोध उस पर रहता है।" विश्वास करने का अर्थ *लगातार और दृढ़ता* के साथ विश्वास करने से है। अनाज्ञाकारी होने का अर्थ अनाज्ञाकारिता में जीवन व्यतीत करने से भी है।

विश्वासियों के अधर्म और अपवित्रता के विरूद्ध परमेश्वर का धर्ममय क्रोध उन पर रहता है। *तीनों क्रियाएँ वर्तमान समय में पाई जाती है।* यह यीशु मसीह के विषय में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की गवाही को समाप्त करता है।

कदम 4. ***अनुप्रयोग***

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 3:1-36 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव

3:1. यदि आप दिन में यीशु मसीह के पास आने से डरते हैं तो आप रात में यीशु मसीह के पास आयें।

3:3,8. विचार करें "कि क्या मेरा नये सिरे से जन्म हुआ है या नहीं?" यह देखने के लिए कि आप विश्वास में है या नहीं, स्वयं की जाँच करें (2 कुरिन्थियों 13:5)।

3:16. यूहन्ना 3:16 याद करें। यह संक्षेप में सुसमाचार का सन्देश है।

3:18. आश्वस्त रहें कि आपके परिवार, मित्रों, पड़ोसियों, सहकर्मियों और देशवासियों, जिन्होंने सुसमाचार सुना है परन्तु उस पर विश्वास नहीं करते है, उन्हें पहले से दोषी ठहरा दिया गया है।

3:19-21. कभी भी एक गुप्त संगठन में शामिल न हों। कोई भी काम अन्धकार में न करें परन्तु हमेशा अपने जीवन को ज्योति में व्यतीत करें। पारदर्शी रहें।

3:30. स्वयं को परमेश्वर के सम्मुख दीन और नम्र करें ताकि यीशु मसीह आप में बढ़ सके।

3:36. विश्वास करें कि जो लोग यीशु को ग्रहण नहीं करते, वे अनन्त जीवन को नहीं देखेंगे।

2. यूहन्ना 3:1-36 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मैं अपने लिए परमेश्वर के प्रेम के विषय में सोचना जारी रखना चाहता हूँ। मैंने यूहन्ना 3:16 को याद कर लिया है, "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" मैं कभी भी यह नहीं भूलना चाहता हूँ कि इससे पहले कि मैं उससे प्रेम करता,

परमेश्वर ने मुझसे प्रेम किया। परमेश्वर ने पहले मुझे प्रेम किया। मैं कभी भी यह भूल नहीं सकता कि परमेश्वर ने अपने प्रेम के बदले अपने एकलौते पुत्र का बलिदान देकर मूल्य चुकाया। यह उसका स्वेच्छा से दिया गया प्रेमरूपी बलिदान था। मैं कभी भी यह भूलना नहीं चाहता हूँ कि परमेश्वर अभी भी मुझसे वैसा ही प्रेम करता है जैसा कि वह हमेशा से करता आया है।

मैं नम्रता में बढ़ना चाहता हूँ। मैं इस तरह से अपने जीवन और सेवकाई का संचालन करना चाहता हूँ कि उसके द्वारा यीशु मसीह बढ़ें और मैं घटूँ। यह महत्व नहीं रखता कि मैंने मसीह के लिए क्या किया, बल्कि यह महत्व रखता है कि मसीह ने मेरे लिए क्या किया। यही कारण है कि मैं उसकी महिमा करना चाहता हूँ और जिन बातों से परमेश्वर प्रसन्न होता है उन बातों को स्वयं पर अधिकार देना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 3:1-36 में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*[निवेदन]* *दूसरों के लिए प्रार्थना करें*

दो या तीन के समूह में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** आपस में मिलकर दूसरों के लिए और जगत के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*[निर्धारित कार्य]* *दूसरे अध्याय के लिए*

(***समूह का अगुवा।*** समूह के सदस्यों को यह कार्य घर के लिए लिखित रूप में दें या उन्हें इसे अपनी नोटबुक में लिखने दें)।

1. समर्पण। शिष्य बनाने और मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध रहें।
2. यूहन्ना अध्याय 3 पर दूसरे व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ प्रचार, शिक्षा या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1 कुरिन्थियों 4-6** के आधे अध्यायों के लिए शान्त समय निर्धारित करें।
   सत्य विधि का उपयोग करें। इसके नोट्स बना लें।
4. याद करना। बाइबल की नई आयतों **(5) (यूहन्ना 4:24)** पर ध्यान लगाएँ और उन्हें याद करें। पहले याद की गई पाँच बाइबल की आयतों की समीक्षा करें।
5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी और व्यक्ति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर किस प्रकार कार्य करता है (भजन संहिता 5:3)।
6. मसीह की कलीसिया का निर्माण करने के विषय में अपनी नोटबुक में लिख लें। जो नोट्स आपने अपने चुने हुए समय में बनाए थे, जिन नोट्स को आपने याद किया था, अपने बाइबल अध्ययन के नोट्स और इस कार्य के नोट्स को भी इसमें शामिल करें।